

# प्राचीन इसराइल में सामाजिक बहिष्कार के लिए सामाजिक न्याय, भाग 2, विधवाएँ, अनाथ और निवासी एलियंस परिभाषित

© 2024 माइकल हार्बिन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. माइकल हार्बिन हैं जो प्राचीन इज़राइल में सामाजिक आउटलायर्स के लिए सामाजिक न्याय पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह भाग दो है, विधवाएँ, अनाथ और निवासी एलियंस परिभाषित।

शालोम, मैं माइकल हार्बिन हूँ, और हम प्राचीन इज़राइल में सामाजिक न्याय और सामाजिक आउटलायर्स पर अपनी प्रस्तुति जारी रख रहे हैं।

यह विशेष सत्र विधवाओं, अनाथों और निवासी एलियंस के बारे में होगा, और हम इन शब्दों को परिभाषित करने जा रहे हैं। भाग एक में, हमने पुराने नियम के पाठ, पुरातत्व, नृवंशविज्ञान और कुछ हद तक तुलनात्मक संस्कृतियों से आकर्षित होकर कांस्य युग के अंत में इज़राइली संस्कृति को देखा। हमने देखा कि उस अवधि की इज़राइली संस्कृति में मुख्य रूप से गाँव शामिल थे, जिन्हें कभी-कभी पाठ में शहर कहा जाता था, जिन्हें हमने एक आम खेत या कृषि क्षेत्र से घिरे हुए घनी आबादी वाले आवासों के रूप में वर्णित किया था, जिन्हें व्यक्तिगत रूप से स्वामित्व वाले भागों में विभाजित किया गया था।

हमारा आधार यह था कि परिणामी सामाजिक संरचना ने सांस्कृतिक मानदंडों को जन्म दिया जो पुराने नियम के कई आख्यानो के आधार हैं, जिनमें विशेष रूप से रूथ का वृत्तांत शामिल है। जबकि परमेश्वर ने राष्ट्र को आशीर्वाद देने का वादा किया था ताकि वह समृद्ध हो, उसने शुरू से ही यह भी स्पष्ट कर दिया था कि राष्ट्र कभी भी उस स्थिति तक नहीं पहुँचेगा। हमेशा ऐसे लोग होंगे जो आर्थिक रूप से संघर्ष करेंगे।

इस तनाव का उदाहरण व्यवस्थाविवरण 15 और सब्त वर्ष की चर्चा में मिलता है, जो 15:4 में वादा करता है कि तुम्हारे बीच कोई गरीब नहीं रहेगा, हालाँकि इस चेतावनी के साथ कि लोगों को आज्ञा माननी होगी और 15:11 में चेतावनी दी गई है कि गरीब कभी भी देश में नहीं रहेंगे। यह तनाव पूर्ण आज्ञाकारिता पर आधारित आदर्श और निरंतर अवज्ञा से उत्पन्न वास्तविकता के बीच एक द्वंद्व को दर्शाता है। अपनी दया में, भगवान ने टोरा में एक सामाजिक न्याय सुरक्षा जाल प्रदान किया है ताकि उन व्यक्तियों और परिवारों की सहायता की जा सके जो किसी भी कारण से विपत्ति का सामना करते हैं। हालाँकि, मजबूत पारिवारिक संबंधों और गाँव के करीब रहने वाले विस्तारित परिवार समूहों को देखते हुए, जिसे हमने भाग 1 में देखा था, कोई आश्चर्य करता है कि पुराने नियम में विशेष सामाजिक न्याय प्रावधानों के लिए विधवाओं और अनाथों को क्यों चुना गया है।

इसी तरह, गैर-इज़रायलियों के संबंध में सख्त अलगाव को देखते हुए, किसी को न केवल विधवाओं और अनाथों के लिए विशेष सामाजिक न्याय प्रावधान प्रदान किए जाने पर आश्चर्य होना चाहिए, बल्कि उनके लिए भी और उन्हें नियमित रूप से विधवाओं और अनाथों के साथ एक त्रिक के रूप में शामिल किया जाता है, जिसे मैंने इस वाक्यांश, WORA के रूप में संक्षिप्त किया है। विधवाएँ, अनाथ, निवासी विदेशी। संभालने में आसानी के लिए, हम इस चार-अक्षरों के शब्द का उपयोग करेंगे।

रिचर्ड हियर्स ने तीन समूहों को दासों के रूप में शामिल किया है, जिसमें ऐसे लोग शामिल हैं जो विशेष रूप से कमजोर हैं क्योंकि उनके पास समर्थन के स्वतंत्र साधन नहीं हैं। जबकि यह उचित लगता है, और हम नाओमी और रूथ जैसे मामलों में इसके पहलुओं को देखते हैं, साथ ही एलिजा से जुड़ी सारफत की विधवा को भी देखते हैं, ऐसा लगता है कि यह स्थिति को एकल परिवारों के पश्चिमी सांस्कृतिक लेंस के माध्यम से देखता है। हमारी पश्चिमी संस्कृति में, हम एकल परिवारों को मूल रूप से दो पीढ़ियों, माता-पिता और बच्चों के रूप में सोचते हैं, जैसा कि इस चित्र में दिखाया गया है।

अर्थव्यवस्था की खातिर, मैं इसे प्रत्येक के एक बच्चे के रूप में शामिल करता हूँ, लेकिन संख्या एक बच्चे से लेकर आधा दर्जन या उससे अधिक और विभिन्न प्रकार के पुरुष और महिलाएँ हो सकती है। हिब्रू संस्कृति का एक अलग दृष्टिकोण था। सबसे पहले, हमें एक आम धारणा को संबोधित करना चाहिए कि उस युग के दौरान बड़े परिवार इज़राइल के लिए आदर्श थे।

इसका एक मुख्य उदाहरण याकूब है, जिसके परिवार में 70 लोग थे जब वह मिस्र गया, जिसमें उसकी पत्नियाँ शामिल नहीं थीं। हालाँकि, उस संख्या या उसके बेटों की पत्नियों को विशेष रूप से छूट दी गई थी। उस संख्या में याकूब की कई पत्नियाँ शामिल थीं और उत्पत्ति 46.7 में न केवल बच्चे बल्कि पोते-पोतियाँ भी शामिल थीं। एक अन्य पहलू या उदाहरण गिदोन है, जिसके बारे में न्यायियों 8.30 में 70 बेटों के रूप में दर्ज किया गया है।

जबकि उस पाठ में स्पष्ट रूप से पोते का उल्लेख नहीं है, यहाँ अनुवादित शब्द बेटों में पोते शामिल हैं या हो सकते हैं, जैसा कि याकूब के साथ हुआ था। उस अंश में यह भी दर्ज है कि गिदोन की कई पत्नियाँ थीं, हालाँकि हमें यह नहीं बताया गया है कि कितनी थीं। जब हम इसे व्यापक संदर्भ में देखते हैं, तो हम पाते हैं कि अपवाद प्रतीत होते हैं।

याकूब के पिता इसहाक के दो जुड़वाँ बच्चे थे, याकूब और एसाव। इसहाक के पिता अब्राहम को अपनी पत्नी सारा से एक बेटा और अपनी उपपत्नी से दूसरा बेटा हुआ। उनकी लंबी उम्र के कारण, सारा की मृत्यु के बाद, उन्होंने तीसरी पत्नी केतूरा से छह और बेटों को जन्म दिया।

लेकिन जब हम याकूब पर विचार करते हैं, तो उसकी पहली पत्नी लिआ के छह बेटे थे, और बाकी तीन पत्नियों के सिर्फ़ दो-दो बेटे थे। दूसरे बेटे के जन्म के बाद राहेल की प्रसव के दौरान मृत्यु हो गई। और हालाँकि हमें यह नहीं बताया गया है कि उनकी कितनी बेटियाँ थीं, लेकिन ऐसा लगता है कि कुछ बेटियाँ थीं।

जब हम उस अवधि के दौरान रहने वाले न्यायाधीशों को देखते हैं, तो हम चरम सीमाओं को देखते हैं। गिदोन के कई पत्नियों से 70 बच्चे हुए, लेकिन सैमसन के एक भी नहीं था। वह जल्दी मर गया।

यिप्तह की सिर्फ एक बेटी थी। नाओमी के पति एलीमेलेक के सिर्फ दो बेटे थे और दोनों बेटों में से किसी के भी कोई संतान नहीं थी, हालाँकि वे शादीशुदा थे। फिलिप किंग और लॉरेन स्टीगर ने बाइबिल के इज़राइल में अपने जीवन में समग्र साक्ष्य से अनुमान लगाया है कि इज़राइली महिलाओं ने औसतन चार जीवित जन्म दिए।

इससे छह लोगों के एक बुनियादी एकल परिवार का सुझाव मिलता है, लेकिन उनका सुझाव है कि बाल मृत्यु दर ने परिवार को चार तक कम कर दिया। हमारे यहाँ अरेख में यही दिखाया गया है। मुझे लगता है कि उनका आधार उच्च प्रतीत होता है।

मैं इसे फिर से कहना चाहूँगा। उनका आधार उच्च शिशु मृत्यु दर का है, जो 50% के बराबर है, गर्भधारण के बीच तीन से चार साल का अंतर, स्तनपान के कारण, प्रजनन की कम अवधि के साथ। मेरा सुझाव है कि 50% की शिशु मृत्यु दर उच्च है, और अंतिम दो आंकड़े, साथ ही गर्भधारण की संख्या, कम लगती है।

इसलिए व्यक्तिगत रूप से, मैं चार से छह जीवित बच्चों वाले एक सामान्य परिवार से अधिक परिचित और अधिक सहज हूँ। तो, छह से आठ का एक विशिष्ट एकल परिवार। अब, मैं एक या दो बेटे और दो बेटियाँ रखता हूँ।

यह कोई भी संयोजन हो सकता है। हिब्रू संस्कृति और हमारी आधुनिक पश्चिमी संस्कृति के बीच एक और अंतर यह है कि इस अवधि के लिए एक आदर्श स्पष्ट प्रतीत होता है, जिसका हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं। वह बात यह है कि, अक्सर, परिवार में तीन पीढ़ियाँ होती हैं।

दादा-दादी, या जीवित दादा-दादी, अक्सर दादी, बेटे और उसकी पत्नी और उनके बच्चों के साथ रहते थे। दो-पीढ़ी के परमाणु परिवार की हमारी अवधारणा के साथ इसके विपरीत, मैंने इजरायल के लिए एक अधिक विशिष्ट संरचना दिखाने के लिए आणविक परिवार का शीर्षक अपनाया है - पुरुष और पत्नी, पुरुष के माता-पिता और फिर बच्चे।

भाग एक में विकसित सामाजिक आधार रेखा महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि प्रदान करती है, इसलिए आइए हम खुद को कुछ बुनियादी अवलोकनों की याद दिलाएँ। कई अध्ययनों से पता चलता है कि एक सामान्य परिवार में एक व्यक्ति किसी दिए गए गाँव में पला-बढ़ा होगा, जहाँ उसने अपने पूर्वजों की ज़मीन पर काम करना सीखा होगा, जो कि इज़राइल के लिए काफी हद तक वह ज़मीन थी जिसे ईश्वर ने बसने के समय राष्ट्र को दिया था। उसने उसी रिश्तेदारी समूह की महिला से विवाह किया होगा, संभवतः उसी गाँव से या बहुत नज़दीकी गाँव से।

पत्नी पति के घर में चली गई होगी, और यह व्यवस्था पुराने नियम में पिता के घर या पिता के घर के रूप में कही गई है। शुरू में, ऐसा लगता है कि दंपति उसी परिसर के घर में रहते थे जिसमें उनके माता-पिता रहते थे। यह मानते हुए कि दोनों पति-पत्नी इस हद तक जीवित रहे कि उनके

बच्चे वयस्क हो गए, और उनका विवाह हुआ और उनके अपने बच्चे भी हुए, माता-पिता या वास्तव में, अब दादा-दादी की उम्र बढ़ने के साथ रिश्ते में बदलाव आया होगा।

यदि माता-पिता दोनों जीवित रहे हों, लेकिन वे पहले की तरह कठोर परिश्रम करने में सक्षम नहीं थे, तो यह परिवर्तन धीरे-धीरे हुआ होगा, या दादा-दादी में से किसी एक की मृत्यु के कारण यह अचानक हुआ होगा। पति-पत्नी के बीच उम्र में जो अंतर देखा जाता है, उसे देखते हुए, कई विद्वानों का सुझाव है कि पत्नियाँ आमतौर पर अपने पतियों से 10 से 15 साल छोटी रही होंगी। जीवित पति या पत्नी के विधवा होने की संभावना अधिक थी।

उस स्थिति में, अगर सबसे बड़ा बेटा पहले से ही खेत का प्रबंधन नहीं कर रहा था, तो वह यह जिम्मेदारी ले लेगा, और यह संभावना होगी कि हमारा एक आणविक परिवार होगा। मैंने वहाँ एक स्लाइड खो दी। इसके आधार पर, शहर या गाँव में, अन्य परिवारों के साथ कई रिश्ते होंगे, और हम बस उसी पर आगे बढ़ गए।

यह स्थिति बहुत जटिल होगी, और नेवॉक्स स्तर एक विस्तारित परिवार होगा, जिसमें रिश्तेदार जुड़े होंगे। हमारे उद्देश्यों के लिए, हम आणविक परिवारों के बीच अंतर्संबंधों पर विचार कर सकते हैं। यह चाची, चाचा और चचेरे भाई, या कम से कम पहले चचेरे भाई में आता है, और इसे विस्तारित परिवार कहा जा सकता है।

यह चार्ट लेविटस 18 की सामग्री पर आधारित है, जिसमें अलग-अलग महिलाओं की सूची दी गई है जिनके साथ एक इज़राइली पुरुष को यौन संबंध बनाने से मना किया गया होगा। मेरी आगामी लेविटस टिप्पणी में, मैं इसे विस्तारित परिवार का नाम देता हूँ क्योंकि यह कुछ ऐसे रिश्तों को दर्शाता है जिनके लिए यौन संबंध निषिद्ध थे, और इस प्रकार, विवाह निषिद्ध होगा। यह चार्ट हमें कम से कम दूसरे चचेरे भाई-बहनों तक ले जाता है।

यह पहला स्थान होगा जहाँ विवाह को एक व्यवहार्य विकल्प माना जा सकता है। आज, हम सामाजिक ताने-बाने को पारिवारिक इकाइयों के संग्रह के रूप में देखते हैं, जो अक्सर दुनिया के एक ही हिस्से से नहीं होते, नज़दीकी रिश्तेदारी की बात तो दूर की बात है। पुराने नियम के इस्त्राएल के लिए, जो भूमि पर बसे थे, उनमें से ज़्यादातर रिश्ते या तो उसी गाँव में या आस-पास के दूसरे गाँवों में होते थे।

हमारे नए दृष्टिकोण से, यह पैटर्न रक्त संबंधी की अवधारणा पर नया जोर देता है। स्पष्ट रूप से, संस्कृति का सामाजिक ताना-बाना बहुत ही बारीकी से जुड़ा हुआ होगा, जिससे ऐसी स्थिति पैदा होगी जहाँ सामाजिक ताने-बाने में दरार के व्यापक प्रभाव होंगे। मैं इसके लिए जिस मॉडल का उपयोग करना पसंद करता हूँ वह एक रजाई है।

जब मैंने इस बारे में सोचा, तो मैंने एक पैटर्न चुना जो मेरी माँ ने अपने प्रत्येक पोते-पोती के लिए शादी के तोहफे के रूप में बनाया था। इस पैटर्न को शादी की अंगूठी कहा जाता है, और मैंने इसे इसलिए चुना क्योंकि इसमें विभिन्न तत्व आपस में मिलकर एक समग्र पैटर्न बनाते हैं जिसे

अनिश्चित काल तक बढ़ाया जा सकता है। हालाँकि, मैं जिस आधार पर काम कर रहा हूँ, वह यह है कि विवाह के सामाजिक न्याय का उद्देश्य सामाजिक ताने-बाने को संरक्षित करना है।

हम इस सामाजिक संरचना मॉडल को तीसरे और चौथे भाग में और अधिक विस्तार से देखेंगे। इस्राएली संस्कृति में, राष्ट्र के हिस्से के रूप में सामाजिक संरचना के दो उच्च स्तर प्रतीत होते हैं। ये एक कबीला और फिर जनजाति थे।

हम इस अध्ययन में नहीं जाएंगे क्योंकि सामाजिक न्याय के क्षेत्रों में, ऐसा लगता है कि अधिकांश बातचीत गांव-शहर स्तर पर और विस्तारित परिवार के इन पहलुओं पर हुई है। पुरातत्व के अनुसार, उजी अवनेर का सुझाव है कि विस्तारित परिवारों के कुछ साक्ष्य लगभग 25 व्यक्तियों के होंगे, जैसा कि हम इसे देखते हैं। इससे एक जटिल सामाजिक संरचना का निर्माण शुरू होता है।

यह स्लाइड इसमें शामिल विभिन्न रिश्तों को दिखाती है, और पुरुष और उसकी पत्नी के इर्द-गिर्द मौजूद हर आकृति दूसरे परिवार का प्रतिनिधित्व करती है। तो, आप देख सकते हैं कि ये सभी कैसे परस्पर क्रिया करते हैं। जब हम इस जटिल चार्ट को देखते हैं, तो याद रखें कि इसके कई रूप हैं, खासकर अगर किसी भी स्तर पर अधिक भाई-बहन शामिल हों।

इसके अलावा, सबसे अधिक संभावना है कि ये सभी रिश्तेदार एक ही शहर में रहते होंगे या कम से कम उसके आस-पास की कुछ बस्तियों में। मुद्दा यह है कि अगर किसी पुरुष की मृत्यु हो जाती है, तो जीवित विधवा के पास अपने समुदाय में रिश्तेदारों का एक नेटवर्क होगा जो उसे विभिन्न तरीकों से सहायता प्रदान करेगा। जब हम विधवाओं के बारे में बात करना शुरू करते हैं, तो एक बात जिस पर अक्सर विचार नहीं किया जाता है वह यह है कि जब उसने अपने पति को खोया था, तो वह कितनी बार विधवा हुई थी।

अगर वह छोटी थी, तो पुनर्विवाह की संभावना थी। अगर टोरा का पालन किया जाता है और उसके पति का कोई भाई है, तो भाई से उससे शादी करने की उम्मीद की जाती है। अगर उसके बच्चे नहीं थे, यानी अगर उसके पहले से कोई बच्चा नहीं था।

अगर उसके बच्चे थे, तो ऐसा लगता है कि यह उम्मीद की जाती थी कि बच्चे बुढ़ापे में उसे सुरक्षा प्रदान करेंगे। यह विशेष रूप से तब होता जब बच्चे विवाहित होते। वास्तव में, अगर विधवा वृद्ध थी, तो यह अच्छी बात हो सकती थी कि वह पहले से ही एक बेटे के साथ रह रही थी।

कई अध्ययनों से पता चलता है कि यह अपेक्षित पैटर्न है। एक विधवा अपने विवाहित बच्चों के साथ रहती थी, जिन्हें विरासत में मिली थी और अब वे पारिवारिक ज़मीन पर काम कर रहे हैं। इस प्रकार, कई इस्राएलियों के लिए, बड़े होने पर उन्हें जो परिवार मिला होगा, वह कुछ इस तरह का रहा होगा।

एक आदमी और उसकी पत्नी, शायद चार बच्चे, एक माँ और एक सास। सामग्री में उस विस्तार के साथ, आइए तीन प्रमुख आउटलायर समूहों को परिभाषित करें - पहला, विधवा।

हम पहले ही देख चुके हैं कि ज़्यादातर मामलों में, एक विधवा अपने वयस्क बेटे के साथ रहती होगी, बेशक, उसकी उम्र के हिसाब से। अगर ऐसा है, भले ही कुछ अपवाद भी हो सकते हैं, तो पाठ में विधवा प्रावधानों के बारे में एक सामान्य बयान क्यों दिया गया है? और जब कोई अनाथों पर विचार करता है, तो मुद्दा और भी जटिल हो जाता है। भाग 1 में प्रस्तुत नज़दीकी आवासीय निकटता और विस्तारित पारिवारिक संबंधों को देखते हुए, एक अनाथ कैसे दरारों के बीच में आ सकता है ताकि पाठ में उद्धृत प्रावधानों में आवश्यक समर्थन के बिना पूरी तरह से रह सके? इसके अलावा, विक्टर मैथ्यूज़ और डॉन बेंजामिन ने प्राचीन इज़राइल की सामाजिक दुनिया के अपने अध्ययन में यह क्यों सुझाया कि विधवाएँ और अनाथ बिना किसी सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक स्थिति के कानूनी रूप से बेघर थे? वास्तव में, उन्होंने उन्हें वेश्याओं के रूप में वर्गीकृत किया।

सीमित संख्या में महिलाएँ। यह कई कारणों से समस्याजनक है। सबसे पहले, ऐसा लगता है कि सभी अनाथ बच्चे महिलाएँ थीं।

दूसरा, वे कभी तीसरे समूह, निवासी विदेशियों को संबोधित नहीं करते, जो आम तौर पर पुरुष प्रतीत होते हैं। तीसरा, उनका वर्गीकरण यह मानता है कि तीनों बेघर थे। जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, एक विधवा संभवतः अपने वयस्क बच्चों के साथ रहती थी।

अगर ऐसा न भी हो, जैसा कि भाग 1 में बताया गया है, तो विधवा का बेघर होना ज़रूरी नहीं है। यही बात निवासी विदेशी के लिए भी सच है। इसके अलावा, बेघर होने की अवधारणा ही समस्याग्रस्त है।

प्राचीन दुनिया में बेघर होना कोई नई बात नहीं थी, लेकिन इसका चरित्र चित्रण आज की हमारी समझ से बहुत अलग है। आधुनिक बेघर होना शहरी, कुछ हद तक औद्योगिक समाजों का परिणाम प्रतीत होता है। बड़े, कम आबादी वाले क्षेत्रों वाले मुख्य रूप से कृषि प्रधान समाजों में, एक बेघर व्यक्ति अशांत क्षेत्रों में गायब हो सकता है या एक गांव से दूसरे गांव में भटक सकता है, एक घुमंतू मजदूर के रूप में काम कर सकता है।

बाइबल की सामग्री से पता चलता है कि दोनों घटनाएँ प्राचीन इस्राएल में घटित हुई थीं। वास्तव में, जिस काल का हम अध्ययन कर रहे हैं, उसमें दो प्रमुख उदाहरण दिए गए हैं। पहला दाऊद का है।

जब वह शाऊल से भागा, तो वह अपने अनुयायियों के साथ जंगल में जहाँ भी जा सकता था, वहाँ गया और किले बनाए और 1 शमूएल 23 में ज़ीफ़ के जंगल में पहाड़ी इलाके में रहा। आज, हम कह सकते हैं कि वे डेरा डाले हुए थे या शायद मुश्किलों से जूझ रहे थे। संक्षेप में, वे ज़मीन पर रह रहे थे, अक्सर गुफाओं में रहते थे, किसी शहर की सड़कों पर बिस्तर नहीं बिछाते थे।

अब तक, मैंने लौह युग के दौरान यरूशलेम की किसी मुख्य सड़क के किनारे किसी इस्राएली द्वारा अर्ध-स्थायी शिविर बनाने का कोई सबूत नहीं देखा है। दूसरा उदाहरण जोनाथन बेन गेशोम

का होगा, जो न्यायियों के काल में बेथलहम का एक लेवी था। न्यायियों 17.8 बताता है कि कैसे उसने बेथलहम छोड़ दिया, उद्धरण, जहाँ भी उसे जगह मिल गई, वहाँ रहने लगा।

वह एप्रैम के पहाड़ी इलाके में पहुंचा, जहां उसे रहने के लिए जगह दी गई और मीका के लिए पुजारी के रूप में काम करने की नौकरी दी गई। इनके लिए, अमेरिकी संस्कृति में, होबो एक बेहतर शब्द या एनालॉग हो सकता है। हालांकि एक विदेशी नहीं, जोनाथन इस पुराने नियम के निवासी विदेशी प्रावधान का उदाहरण प्रतीत होता है।

जेए थॉम्पसन ने विधवाओं, अनाथों और निवासी विदेशियों को केवल गरीब के रूप में वर्गीकृत किया है, जो कि काफी स्पष्ट प्रतीत होता है क्योंकि उनकी स्थिति को सुधारने के लिए निर्धारित प्रावधान आर्थिक थे। हालांकि, यह वास्तव में यह नहीं बताता कि वे गरीब क्यों थे। जेबी मैककॉनविले ने थोड़ा अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जब उन्होंने कहा कि, उद्धरण, वे गरीबों के समान नहीं थे, बल्कि वे लोग थे जिनकी स्वतंत्र कानूनी स्थिति को मान्यता नहीं दी जा सकती है।

जबकि अन्य सुझाव दिए गए हैं, सवाल बना हुआ है: इस्राएली संस्कृति में उनके पास क्या समान था जो विशेष विचार के योग्य था? इसका उत्तर देने के लिए, हम पहले प्रत्येक समूह को परिभाषित करेंगे और फिर मूल्यांकन करेंगे कि तीनों में क्या समान था। विधवाएँ। परिभाषा के अनुसार, अंग्रेजी शब्द विधवा एक ऐसी महिला को दर्शाता है, जिसने अपने पति को खो दिया है और उसने दोबारा शादी नहीं की है।

अलमनाह का अनुवाद है, लेकिन स्थिति ज़्यादा जटिल है। 2003 में हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में प्रस्तुत एक पेपर में, नाओमी स्टीनबर्ग ने नोट किया कि वास्तव में तीन हिब्रू शब्द हैं जिनका अनुवाद विधवा के रूप में किया जाता है।

हमारे पास अलमनाह है, जिसका सीधा मतलब विधवा है। हमारे पास इशा है अलमनाह, जिसका बेहतर अनुवाद विधवा महिला के रूप में किया जा सकता है। और फिर हमारे पास एशेत है हममात, जिसका सबसे अच्छा अनुवाद मृत व्यक्ति की पत्नी या मृतकों की पत्नी के रूप में किया जा सकता है।

वह संपत्ति और आर्थिक संसाधनों के आधार पर तीनों को अलग करती है। अंतिम दो को एक विधवा के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जिसे विरासत में मिली संपत्ति, जैसा कि वह कहती है, जिस पर उसका नियंत्रण है। वह दूसरी दो श्रेणियों, इशा की स्थिति के बारे में बताती है पंचांग और एशेत हममात, इस प्रकार, उद्धरण, उद्धरण, दूसरी श्रेणी के पास अपने पति की पैतृक संपत्ति में मोचन अधिकार हैं, जिसका प्रयोग उसने अपने बेटे के माध्यम से किया था।

यह दूसरी श्रेणी है, एक विधवा महिला, जबकि मृतक की पत्नी की मृत्यु, उद्धरण, उसके पैतृक जोतों के मोचन अधिकारों का प्रयोग करने के लिए एक वारिस को जन्म देने से पहले हो चुकी थी, उद्धरण समाप्त। यह एक दिलचस्प अवधारणा है, जो भूमि स्वामित्व और महिलाओं के अधिकारों की हमारी सामान्य समझ के विपरीत है। जबकि वह अपने भेद का समर्थन करती दिखती है, यह

एक ऐसा क्षेत्र है जिस पर और अधिक काम किया जा सकता है, विशेष रूप से सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की अधिक सूक्ष्म समझ के साथ जो हमने भाग एक में प्रदान की है।

इसके विपरीत, एक अलमनाह को एक विधवा माना जाता है जो अभावग्रस्त है, जिसके जीवित पुरुष रिश्तेदार, पुरुष वयस्क रिश्तेदार हो सकते हैं जो या तो बहुत गरीब हैं या उसे आर्थिक सहायता देने के लिए तैयार नहीं हैं। होफनर का तर्क है कि एक अलमनाह के पास ज़मीन हो सकती है, जिसे परिवर्तित किया जा सकता है या धोखाधड़ी से गबन किया जा सकता है। स्टाइनबर्ग के भेद सभी सवालों के जवाब नहीं देते हैं।

उदाहरण के लिए, एक महिला को क्या कहा जाएगा जिसने अपने पति को खोने से पहले अपने परिवार का पालन-पोषण किया था और अब वह एक विवाहित बेटे और परिवार के साथ रह रही है, जो कि सामाजिक आदर्श प्रतीत होता है? इसके अलावा, अगर विधवा के पास परिवार की संपत्ति का नियंत्रण होता, चाहे उसका कोई बड़ा बेटा हो या न हो, तो कटाई के कानूनों के लिए इतनी अनिवार्यता क्यों होगी? अगर एक विधवा के पास अपने पति को खोने के बाद परिवार की संपत्ति का नियंत्रण नहीं होता, तो क्या वह और उसके साथ कोई छोटा बच्चा वास्तव में एक ऐसे गाँव में बेघर हो जाता जहाँ वह एक विस्तारित परिवार और उससे भी बड़े रिश्तेदारी समूह का हिस्सा थी क्योंकि यह सबसे अधिक संभावना एक अंतर्जातीय विवाह था? किसी भी मामले में, पति के चले जाने से परिवार और भी अधिक अनिश्चित स्थिति में आ गया क्योंकि इस्राएलियों के लिए मुख्य भोजन अनाज था, मुख्य रूप से गेहूँ और जौ। इसके लिए हल चलाने और बोने की कठिन प्रक्रिया की आवश्यकता होती थी, एक ऐसी प्रक्रिया जिसके लिए पुरुष की अधिक शारीरिक शक्ति की आवश्यकता होती थी। भले ही विधवा के पास भूमि का नियंत्रण हो, अगर वह भूमि जोतने में सक्षम नहीं थी, तो यह अनिवार्य रूप से बेकार था।

दूसरी ओर, यदि पत्नी पहले मर जाती, शायद बच्चे के जन्म के समय, तो पति ने संभवतः दोबारा विवाह कर लिया होता। अन्यथा, वह घरेलू ज़रूरतों को कैसे पूरा करता? लेकिन यह इस अध्ययन से परे है। पुराने नियम के कानून में एक प्रावधान यह है कि यदि कोई व्यक्ति मर जाता है और अपनी पत्नी, जिसे यहाँ मृतकों की पत्नी कहा जाता है, को बिना बच्चों के छोड़ देता है, तो यह लेविरेट विवाह है।

यह व्यवस्थाविवरण 25 में है, और हम भाग चार में इस पर अधिक चर्चा करेंगे। चूँकि इसका उद्देश्य एक वारिस प्रदान करना था, इसलिए अगर विधवा के बच्चे थे, तो लेविरेट विवाह एक कारक नहीं लगता। या अगर विधवा नाओमी की तरह बच्चे पैदा करने की उम्र पार कर चुकी थी।

इसके बजाय, वयस्क बेटे वाली वृद्ध विधवा विस्तारित परिवार का हिस्सा होगी। यदि बच्चा कम उम्र का था, तो लेविटिकस में विधवा प्रावधानों को तब तक पुल के रूप में देखा जा सकता है जब तक कि बच्चा अपनी माँ की देखभाल करने के लिए पर्याप्त बड़ा न हो जाए। यदि निःसंतान विधवा बच्चे पैदा करने की उम्र पार कर चुकी थी, तो यह एक अलग कहानी है।

रूथ की पुस्तक इनमें से कुछ मुद्दों को संबोधित करती है, और इसमें शामिल कानूनी मुद्दों के कुछ प्रमुख पहलुओं की समीक्षा करना उचित है। नाओमी एलीमेलेक की विधवा थी, लेकिन उम्र



के कारण, वह लेविरेट विवाह योग्यता से बाहर लगती थी। और परिणामस्वरूप, वह विधवा प्रावधान के अंतर्गत नहीं आ सकती थी, हालाँकि एलीमेलेक की भूमि का निपटान एक खुला प्रश्न हो सकता है।

हमारे पास इस बात को संबोधित करने के लिए कोई सबूत नहीं है। रूथ का मामला ज़्यादा जटिल होगा। हालाँकि इस पर बहस हुई, लेकिन ऐसा लगता है कि उसकी स्थिति लेविरेट विवाह का एक उदाहरण थी।

हालाँकि, ज़मींदार की असली विधवा नाओमी थी, जिसने न केवल अपने पति को खोया था, बल्कि दोनों बेटों को भी खो दिया था। इसके अलावा, नाओमी के बेटों ने विदेशियों, मोआबी महिलाओं से विवाह किया था। रूथ, जिसकी शादी नाओमी के बेटों में से एक मचलान से हुई थी, वह भी विधवा थी।

व्यवस्थाविवरण 2:3 में यह घोषणा किए जाने के बावजूद कि कोई भी मोआबी प्रभु की सभा में प्रवेश नहीं कर सकता, रूथ के नाओमी के साथ बेथलेहम लौटने से स्पष्ट रूप से अनिर्दिष्ट कानूनी अधिकार प्राप्त हुए। अस्थायी रूप से, भूमि की स्थिति को इस प्रकार से जोड़ा जा सकता है। रूथ 4:3 में अंग्रेजी पाठ के अनुसार, नाओमी एलीमेलेक की कुछ भूमि बेचने जा रही थी।

इसका क्या मतलब है यह स्पष्ट नहीं है। किसी भी मामले में, पाठ के अनुसार, नाओमी को भूमि का उपयोग वापस पाने के लिए, उसे, उद्धरण, इसे छुड़ाना था। मैं कहता हूँ कि यह स्पष्ट नहीं है क्योंकि भूमि बेची नहीं जा सकती थी।

इसलिए, ज़्यादातर विद्वानों का मानना है कि हम वास्तव में भूमि पट्टे से निपट रहे हैं, कम से कम जुबली के समय तक, जिसका मैंने कहीं और अध्ययन किया है। इससे पता चलता है कि एलीमेलेक की विधवा के समय, भूमि पर उसका नियंत्रण था। व्यावहारिक रूप से, यह वास्तव में मायने नहीं रखता था, क्योंकि वे जौ की फ़सल की शुरुआत में बेथलेहम पहुँचे थे।

बोने का समय नहीं है। आप फसल नहीं उगा सकते, जिसका मतलब है कि नाओमी के लिए यह ज़मीन मूल रूप से बेकार थी, कम से कम अगले रोपण के मौसम तक, भले ही वह इसे जोतने में सक्षम हो या नहीं। हालाँकि, कानूनी तौर पर, ऐसा प्रतीत होता है कि चूँकि एलीमेलेक के बेटे थे, इसलिए उन्हें विरासत का अधिकार था और बाद में ज़मीन को आगे बढ़ाने का अधिकार था, भले ही वे मर चुके हों।

हालाँकि दोनों बेटों के बच्चे नहीं थे, लेकिन दोनों ने शादी कर ली थी। इस प्रकार, भूमि पर वापस आकर, रूथ एक वैध उत्तराधिकारी की संतान पैदा करने वाली विधवा के रूप में तस्वीर में आ गई। ऐसा प्रतीत होता है कि यही कारण है कि जटिल स्थिति में बोअज़ ने अनाम रिश्तेदार से कहा कि भूमि को छुड़ाने की ज़रूरत है, यानी एक गोएल, एक रिश्तेदार-उद्धारकर्ता की ज़रूरत है, और यह कि इस रिश्तेदार, गोएल को भी रूथ से शादी करनी होगी।

सामान्य अपेक्षा यह होगी कि लेविरेट विवाह के माध्यम से, उसे नाओमी से विवाह करना होगा, लेकिन जाहिर है, चूँकि वह बच्चे पैदा करने की उम्र से परे थी, इसलिए रिश्तेदार ने सबसे अधिक

संभावना यह मान ली कि अब ऐसा नहीं है, और फिर बोअज़ ने दावा किया कि आवश्यकता रूथ को सौंपी गई थी, और फिर बोअज़ ने ज़मीन खरीदने के लिए सहमति व्यक्त की। इस प्रक्रिया में, उसने मैकलिन और किलियन दोनों की संपत्ति और रूथ को पत्नी के रूप में हासिल किया, उद्धरण, मृतक के नाम को अपनी विरासत में बढ़ाने के लिए, उद्धरण समाप्त। यह अंतिम कथन है जो सबसे दृढ़ता से इंगित करता है कि विवाह कार्यात्मक रूप से एक लेविरेट विवाह था जिसमें बोअज़ सहमत था कि विरासत एक लिम्बेलेक्स होगी ।

यह सुझाव दिया जाता है कि बोअज़ और रूथ से एक बेटे के जन्म के बाद ही स्थानीय निवासियों द्वारा नाओमी की प्रशंसा की जाती है क्योंकि अब वह "मुक्तिदाता के बिना नहीं है।" संक्षेप में, ये पड़ोसी बताते हैं कि इस बेटे का एक कार्य उसकी बुढ़ापे में सहारा बनना था। इस बिंदु तक, यह धारणा रही है कि जिस विधवा को संबोधित किया जा रहा है वह एक इस्राएली महिला है।

जैसा कि हमने देखा है, इससे समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। यह आधारभूत स्थिति के संबंध में समस्याएँ प्रस्तुत करता है, जिसमें यह माना जाता है कि विधवा को उसके बेटे या रिश्तेदार द्वारा सहायता प्रदान की जाएगी, जिसे पारिवारिक भूमि विरासत में मिली है। हम यह भी देखते हैं कि वास्तविक कृषि भूमि से निवास को अलग करने से यह संभावना उत्पन्न हुई कि विधवा भूमि की स्थिति की परवाह किए बिना अपने पति के घर में रह सकती है।

एक विकल्प जिसे लगभग अनदेखा किया जाता है, वह यह संभावना है कि अलमनाह न तो इस्राएली था, न ही उसका दिवंगत पति। मेयर सालज़बर्गर, इस्राएल में श्रम के अपने अध्ययन में, तर्क देते हैं कि अजनबी या निवासी विदेशी, गेर, एक निवासी कनानी का वंशज था जो विजय के बाद भूमि में रह गया था। जबकि इस्राएलियों को अपनी ज़मीन बेचने की अनुमति नहीं थी, वही कनानी बचे हुए लोगों के लिए सही नहीं था।

हालाँकि बाद में उन्हें इज़राइली संस्कृति में आत्मसात कर लिया गया, लेकिन उस समय ऐसा हो सकता है। इस प्रकार, सालज़बर्गर का तर्क है कि विधवा, अलमनाह, एक भूमिहीन कनानी की विधवा होगी, जो उसे वास्तव में आर्थिक रूप से अनिश्चित स्थिति में डाल देगी। यदि ऐसा होता, तो यह समझा जा सकता है कि यह व्यक्ति अपेक्षित सामुदायिक समर्थन मानदंडों पर क्यों खरा नहीं उतरता।

यह इस्राएलियों को आर्थिक सहायता के अवसर प्रदान करने की नसीहत को और भी गहरा बना देगा और शायद रूथ की स्वीकृति के बारे में भी संकेत देगा जब उसने उन अवसरों का लाभ उठाया और इकट्ठा किया।

अनाथ। हमारी दूसरी श्रेणी अनाथ है। जबकि अनाथ शब्द सीधा लगता है, अंग्रेजी अनुवाद में हिब्रू अनुवाद से अलग अर्थ है। अंग्रेजी शब्द अनाथ आम तौर पर एक बच्चे को दर्शाता है जिसने माँ और पिता दोनों को खो दिया है, जो कि कई अंग्रेजी टिप्पणियों का अर्थ है। नतीजतन, जबकि पहली नज़र में स्थिति स्पष्ट लगती है, कई सवाल हैं।

व्यावहारिक दृष्टिकोण से, यदि एक इस्राएली बच्चे ने अपने माता-पिता दोनों को खो दिया है, तो वह बच्चा कहाँ रहता था? यदि उसे रिश्तेदारों ने गोद लिया था, तो उन रिश्तेदारों से बच्चे के लिए भोजन की व्यवस्था करने की अपेक्षा क्यों नहीं की जाती, बजाय इसके कि वह बच्चे को बाहर जाकर अनाज इकट्ठा करने के लिए कहे? चूँकि अनाथों के लिए एक प्रावधान अनाज इकट्ठा करना था, तो किस उम्र में बच्चे से यह कठिन काम करने की अपेक्षा की जाती थी? इन परिस्थितियों में, यदि वह कभी वयस्क हो जाता, तो उसके जीवन में क्या उम्मीद होती? इन सवालों को देखते हुए, गहराई से देखने की आवश्यकता है। अनाथ के रूप में अनुवादित हिब्रू शब्द वास्तव में एक ऐसे बच्चे के रूप में समझा जाता है जिसने अपने पिता को खो दिया है, एक ऐसा अर्थ जो अनुवाद में खो जाता है। उदाहरण के लिए, पुराने नियम की धर्मशास्त्रीय शब्दावली यतम का अनुवाद अनाथ या अनाथ के रूप में करती है, हालाँकि इसकी चर्चा में अंतर को संबोधित नहीं किया गया है, और ऐसा लगता है कि यह शब्द मुख्य रूप से एक ऐसे बच्चे के रूप में देखा जाता है जिसने अपने माता-पिता दोनों को खो दिया है।

ब्राउन-डाइवर-ब्रिग्स लेक्सिकॉन केवल अनाथ का अनुवाद प्रदान करता है। हालाँकि, इसकी प्रविष्टि के अंत में, यह कहता है, उद्धरण, किसी भी मामले में यह स्पष्ट नहीं है कि दोनों माता-पिता मर चुके हैं, उद्धरण का अंत। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, प्राचीन इज़राइली संस्कृति में, ऐसा लगता है कि अनाथ और अनाथ का बहुत अधिक महत्व होगा, विशेष रूप से उस बच्चे को संदर्भित करता है जिसके पास उसका बचाव करने वाला कोई नहीं है।

संदर्भ के अनुसार, यह दिलचस्प है कि अनाथ विधवा से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। वे हमेशा एक दूसरे से बंधे हुए प्रतीत होते हैं। यह एक ऐसी स्थिति का संकेत देता है जहाँ एक महिला ने अपने पति को खो दिया है, लेकिन उसके नाबालिग बच्चे हैं और वह उन्हें खुद पालने की कोशिश कर रही है।

पहले की चर्चा के आलोक में, यह महिला तकनीकी रूप से विस्तृत विवाह के लिए योग्य नहीं होगी क्योंकि उसके बच्चे हैं जिनसे उसके बुढ़ापे में उसकी देखभाल करने की अपेक्षा की जाएगी। नतीजतन, यह निष्कर्ष निकाला गया है कि विधवाओं के साथ अनाथों का लगातार संबंध एक एकल-माता-पिता परिवार को इंगित करता है जिसका नेतृत्व माँ करती है और जीवित रहने के लिए भोजन जुटाने के लिए मिलकर काम करती है। नहीं, मेरे पास ऐसा नहीं है।

अनाथों के मामले में जो बात स्पष्ट नहीं है, वह है ज़मीन का मुद्दा। ऐसा लगता है कि अगर पिता की मृत्यु भी हो जाती है, तो ज़मीन परिवार में ही रहेगी, संभवतः विधवा के कानूनी नियंत्रण में, जैसा कि नाओमी के मामले में सुझाया गया है। सलोफाद की बेटियाँ गिनती 27 में एक मिसाल पेश करती हैं।

सलोफाद का कोई बेटा नहीं था, और उसकी बेटियों को चिंता थी कि उनके पिता अपनी ज़मीन की विरासत न खो दें, इसलिए वे मूसा के पास गईं। नतीजा यह हुआ कि परमेश्वर की ओर से एक निर्देश आया कि अगर कोई आदमी मर जाता है और उसके कोई बेटा नहीं है, तो तुम उसकी विरासत उसकी बेटी को दे दो। अगर उसकी कोई बेटी नहीं है, तो तुम उसकी विरासत उसके भाइयों को दे दो।

और अगर उसका कोई भाई नहीं है, तो तुम उसकी विरासत उसके पिता के भाइयों को दोगे। अगर उसके पिता का कोई भाई नहीं है, तो तुम उसके अपने परिवार में उसके सबसे करीबी रिश्तेदार को विरासत दोगे, जो एक विस्तृत परिवार होगा, और वह उस पर अधिकार करेगा। ऐसे मामले में, उम्मीद यह थी कि जब अनाथ वयस्क हो जाएगा, तो वह जमीन का वारिस होगा और उस पर काम करना जारी रखेगा।

हालाँकि, अगर ऐसा होता, तो अनाथ क्यों बीनता? इस बात के प्रमाण हो सकते हैं कि शारीरिक क्षमताएँ उस संस्कृति में लिंग भूमिकाओं जैसे मामलों को कैसे प्रभावित करती हैं। सेंटर फॉर इकोनॉमिक पॉलिसी रिसर्च के अनुसार, ऐतिहासिक रूप से, लिंग भूमिकाओं में एक कारक हल का उपयोग था। झुकी हुई मिट्टी को जोतने के लिए शरीर के ऊपरी हिस्से की ताकत, पकड़ की ताकत और शक्ति की आवश्यकता होती है, जो हल को खींचने या इसे खींचने वाले जानवर को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

हो सकता है कि तब एक अकेली महिला, यानी विधवा या नाबालिग बच्चे से यह अपेक्षा न की जाती हो कि वह खेतों को बोने के लिए तैयार कर सके, इसलिए उसे अन्य सहायता की आवश्यकता होती है। बाद में, हम देखेंगे कि विधवा और अनाथ बच्चे के लिए एक प्रावधान यह था कि वे कटाई में भाग लें या बीनें। हालाँकि यह निश्चित रूप से शारीरिक रूप से कठिन था, लेकिन इसके लिए उतनी ऊपरी शारीरिक शक्ति की आवश्यकता नहीं थी जितनी कि हल चलाने के लिए होती है।

व्यवस्थाविवरण 14:29 में विधवा का उल्लेख करते समय एक और कारक हो सकता है; क्षमा करें, इसमें उल्लेख किया गया है कि अनाथ और विधवा जो आपके शहर में हैं, वे सचमुच आपके द्वार हैं। इस प्रकार, दोनों का उल्लेख एक साथ किया गया है। ऐसा लगता है कि उपरोक्त निष्कर्षों की पुष्टि होती है कि संदर्भ अनाथों के विपरीत अनाथों के लिए है, और आपके शहर में वाक्यांश आपके देश के विपरीत एक अनुमानित भविष्य की भविष्यवाणी कर सकता है, एक अधिक जटिल संस्कृति जहां समाज के कुछ तत्व अब खेती करके अपना प्राथमिक जीवन नहीं बनाते हैं।

अगर ऐसा होता, तो अनाथ और विधवा को संबोधित किया जा रहा परिवार शायद ऐसा परिवार हो सकता है जिसके पास खेती करने के लिए ज़मीन नहीं है। हमारा अंतिम हिब्रू शब्द है निवासी विदेशी। ग्लास समूह को गेर कहा जाता है, जिसका अनुवाद किंग जेम्स में अजनबी, ESV या संशोधित मानक, अंग्रेजी मानक संस्करण या संशोधित मानक में प्रवासी, या अमेरिकन स्टैंडर्ड या न्यू इंटरनेशनल संस्करण में विदेशी के रूप में किया गया है।

इस शब्द का अर्थ है प्रवासी। निवासी विदेशी को विदेशी, नकरी या नकार से इस तरह अलग किया जाना चाहिए कि वह उस देश में रहने वाला होगा, न कि उस देश में घूमने वाला। इसलिए निवासी विदेशी शब्द का इस्तेमाल किया गया।

निवासी विदेशियों के पास विदेशियों से ज़्यादा विशेषाधिकार और ज़िम्मेदारियाँ होती हैं, लेकिन मूल निवासियों से कम। डेविड बार्कर ने अपनी किताब *टाइट फ़्रिस्ट या ओपन हैंड्स में* इस पर

विस्तार से बताते हुए कहा, उद्धरण, निवासी विदेशी की स्थिति मूल निवासियों और विदेशियों के बीच कहीं होती है, और निवासी व्यक्तिगत विदेशी परिवार के मुखिया के संरक्षण में, एक इज़राइली परिवार के आश्रित सदस्य बनकर समुदाय में शामिल हो सकते हैं, और वे निर्गमन 20 का हवाला देते हैं। इससे रूत की स्थिति की व्याख्या हो सकती है।

जातीयता के संदर्भ में, पुराने नियम में ऐसे व्यक्तियों की कई श्रेणियाँ हैं जो स्थायी रूप से भूमि पर रहते थे लेकिन जो याकूब के वंशज नहीं थे। पहला समूह मिश्रित भीड़ थी जो निर्गमन 12 में मिस्र से आई थी। जैसा कि डगलस स्टीवर्ट ने अपनी टिप्पणी में बताया है, निर्गमन में आयत, उद्धरण, पुष्टि करता है कि निर्गमन और उसके बाद के इस्राएली वास्तव में जातीय रूप से मिश्रित लोग थे।

पलायन के अन्य जातीय समूहों में मिस्रवासी शामिल थे, जैसा कि लैव्यव्यवस्था 24:10 में उल्लेख किया गया है। संख्या 12 में कुशी, जोशुआ 14 में केनिज्जी और जाहिर तौर पर अन्य लोगों का नाम नहीं लिया गया है। हालांकि ये याकूब के वंशज नहीं थे, लेकिन ऐसा लगता है कि ये समूह सिनाई में जातीय जनजातियों में शामिल हो गए थे। फिर उन्होंने विजय के बाद भूमि विभाजन में हिस्सा लिया और इस प्रकार, उनके वंशजों को बाद के उल्लेख में मूल इस्राएलियों के साथ शामिल किया गया।

उदाहरण के लिए, केनिज्जी के रूप में वर्णित कालेब, स्काउटिंग दल के हिस्से के रूप में यहूदा के गोत्र का भी प्रतिनिधित्व करता है। वह संख्या 13 में अन्य 11 के साथ कादेश बरनेआ तक गया। इसके बाद, यहोशू में, यहूदा द्वारा अपनी भूमि प्राप्त करने में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है और इस तरह, वह आत्मसात करने का मॉडल प्रतीत होता है।

दूसरा समूह वे जनजातियाँ होंगी जो विजय के समय भूमि पर निवास करती थीं। पुराने नियम में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि आम धारणा के विपरीत, इस्राएल राष्ट्र ने विजय के दौरान भूमि के सभी निवासियों को समाप्त नहीं किया। गिबोनियों ने धोखे से इस्राएल के साथ गठबंधन बनाया।

उन्हें दासता की स्थिति में रखा गया था। विशेष रूप से, उन्हें व्यक्तिगत रूप से इस्राएलियों के लिए और प्रभु की वेदी के लिए लकड़ी काटने और पानी भरने का काम करना था। परमेश्वर ने उन्हें विदेशियों के रूप में अपने निवास में काम करने के लिए रखा था।

ऐसे संकेत हैं कि उनमें से कुछ ने इस्राएलियों के साथ विवाह किया था। अन्य जनजातियों ने गठबंधन नहीं बनाया, लेकिन उन्हें बाहर नहीं निकाला गया। उदाहरण के लिए, बिन्यामीन यबूसियों को बाहर नहीं निकाल सका, और वे इस्राएलियों के साथ रहना जारी रखा।

वास्तव में, दाऊद ने खलिहान को एक यबूसी से खरीदा था। अन्य कनानी जनजातियाँ, जो मनश्शे, एप्रैम, जबूलून, आशेर और नप्ताली की भूमि में बची हुई हैं, का उल्लेख न्यायियों 1:27-36 में किया गया है। न्यायियों के शुरुआती अध्यायों के अनुसार, ये जनजातियाँ विजय के बाद राष्ट्र के लिए समस्याएँ बन गईं। उनका अंतिम भाग्य अज्ञात है, हालाँकि हमें अंतर्जातीय विवाह के संकेत मिलते हैं, जैसे कि सैमसन ने न्यायियों 14 में एक पलिशती महिला से विवाह किया।

ऐसा हो सकता है कि मंदिर बनाने में मदद करने के लिए सुलैमान द्वारा गिने गए और सीमित किए गए 153,600 निवासी विदेशियों में से अधिकांश उन जनजातियों से आए थे जिन्होंने 2 इतिहास 2 में विजय के समय भूमि पर कब्जा किया था। ऐसा लगता है कि जैसे-जैसे राजशाही के माध्यम से इस्राएल अधिक संगठित होता गया, ये कनानी जनजातियाँ जो बची रहीं, वे हिब्रू भाषी बन गईं, आपस में विवाह कर लिया और अंततः अपनी जातीय पहचान खो बैठीं। यानी, उन्हें मिश्रित भीड़ की तरह आत्मसात कर लिया गया। जबकि संभवतः इनमें से कम से कम कुछ निवासी विदेशियों को धार्मिक रूप से आत्मसात कर लिया गया था, यह विविध आबादी पूजा के बारे में मिश्रित पुरातात्विक संदेश, साथ ही पुराने नियम में अन्य देवताओं के बारे में देखे गए तनाव को समझाने में मदद कर सकती है। इस मुद्दे के संबंध में, ऐसा प्रतीत होता है कि ये पूर्व निवासी उस भूमि पर रहना जारी रखते थे जो उनके पास विजय से पहले थी और इस प्रकार, आम तौर पर निवासी विदेशी प्रावधानों को पूरा नहीं करते थे।

अगर ऐसा होता, तो यह संभावना भी पैदा होती है कि किसी कनानी ने किसी गैर-इज़रायली को ज़मीन बेची होगी, जो शायद बाद में आया कोई आप्रवासी हो, लेकिन ऐसा लगता है कि ज़्यादातर बाद में आए आप्रवासी भूमिहीन रहे होंगे। वे भावी आप्रवासी हमारे समूह का हिस्सा हैं। प्राचीन निकट पूर्व में लोगों के आवागमन की जटिलता को देखते हुए, यह संभावना है कि इन आप्रवासियों की एक महत्वपूर्ण संख्या राष्ट्र के इतिहास में भूमि में प्रवेश कर गई।

टोरा के दिशा-निर्देशों के अनुसार इस्राएलियों को अपनी ज़मीन बेचने से मना किया गया था, इसलिए जब तक वे काम पाने में सक्षम नहीं होते, वे निवासी विदेशी होते जिन्हें इन कल्याणकारी प्रावधानों की ज़रूरत होती। दो प्राथमिक प्रकार के काम सुझाए गए हैं। सबसे पहले, वे या तो कुशल कारीगर या व्यापारी हो सकते हैं जो बड़े समुदायों या शहरों में स्थित नौकरियों को कर सकते हैं।

दूसरा, वे कहीं भी किराए के हाथों से काम कर सकते थे। जीविका खेती कठिन काम था, और उपलब्ध जनशक्ति किसान के लिए काम करने की सीमित भूमि थी। जैसा कि अन्यत्र उल्लेख किया गया है, किसान को अपनी भूमि का प्रबंधन करने में मदद करने के लिए व्यक्तियों को काम पर रखना प्राचीन निकट पूर्व में एक आम बात थी।

इस संदर्भ में आप्रवासन कई कारणों से कठिन है। सबसे पहले, राष्ट्रीय सीमाएँ अस्पष्ट थीं, जैसा कि नागरिकता थी। लोग काफी स्वतंत्र रूप से घूम सकते थे, लेकिन साथ ही, यात्रा करना मुश्किल था और आम तौर पर पैदल ही करना पड़ता था।

संभवतः सबसे बड़ी समस्या किसी ऐसे क्षेत्र में प्रवेश करते समय संचार की होगी जहाँ कोई दूसरी भाषा बोली जाती है। दूसरा, जीवन मूलतः स्थानीय स्तर पर ही जिया जाता था। इसका मतलब है कि ज़्यादातर मामलों में स्वीकृति गाँव के भीतर ही तय होती थी।

एक बाहरी व्यक्ति जो इज़राइली गाँव में दिखाई देता है, चाहे वह इज़राइली हो या विदेशी, उसे काम ढूँढना होगा। यह संभावना है कि इसका मतलब यह है कि उसे रहने के लिए जगह भी मिलेगी। संभवतः, प्रवासी कुछ समय के लिए बेघर होगा, लेकिन जैसा कि ऊपर उल्लेख किया

गया है, इसका मतलब यह है कि वह आम तौर पर शहर में सड़क पर भीख मांगने के बजाय जंगल में सोएगा और चारा तलाशेगा।

तीसरा, एक विदेशी व्यक्ति संभवतः ऐसी जगह जाएगा जहाँ उसे खुद या अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए काम मिल सके। आम तौर पर, इसमें शारीरिक श्रम शामिल होगा। इन अप्रवासियों के पास काम न होने के कई कारण हो सकते हैं, जैसे कि वे अभी-अभी आए हैं, जिस किसान के लिए वे काम करते हैं उसने उन्हें जाने दिया है, या अकाल पड़ा है।

कारण चाहे जो भी हो, इन सामाजिक न्याय प्रावधानों ने उन्हें जीवित रहने के साधन उपलब्ध कराए। इसलिए, इन तीनों समूहों में दो बातें समान प्रतीत होती हैं। सबसे पहले, वे गंभीर आर्थिक कठिनाइयों और सही, गलत बटन के अधीन थे।

आह, हमने इसे खो दिया। वे गंभीर आर्थिक कठिनाइयों के अधीन थे। दूसरा, ये आर्थिक कठिनाइयाँ संसाधनों की कमी से उत्पन्न होती हैं, जो उस संस्कृति में मुख्य रूप से कृषि भूमि होती है।

जबकि हम अक्सर इस स्थिति को भूमि की कमी के रूप में देखते हैं, हमने देखा कि विधवाओं के मामले में, समस्या यह रही होगी कि वे खेती करने में असमर्थ थीं। अनार्यों के मामले में भी यही सच हो सकता है। निवासी विदेशियों के मामले में, भूमि की कमी इस्राएलियों द्वारा अपनी विरासत को बेचने पर प्रतिबंध का परिणाम प्रतीत होती है।

जबकि एक निवासी विदेशी मजदूर के रूप में काम कर सकता था, इससे उसे बेरोजगारी का खतरा था। हमने जो सुझाव दिया है, जो हमने सुझाया है वह सामाजिक मानदंड हो सकता है, और मूल्यांकन किया है कि ये आउटलाइयर समूह मानदंडों से कैसे बाहर हैं, अब हमें आउटलाइयर के लिए सुरक्षा जाल के रूप में काम करने के लिए निर्दिष्ट निर्देशित प्रावधानों का मूल्यांकन करने की आवश्यकता होगी। लेकिन ऐसा करने से पहले, हम सार में सामाजिक न्याय की अवधारणा को खोजना और चर्चा करना चाहेंगे। और यह भाग तीन होगा। धन्यवाद। यह डॉ. माइकल हार्बिन द्वारा

प्राचीन इज़राइल में सामाजिक आउटलाइयर के लिए सामाजिक न्याय पर उनके शिक्षण में है। यह भाग दो है, विधवाएँ, अनाथ और निवासी एलियंस परिभाषित।